जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

26 अगस्त 2022

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया में **'नेहरू और नैम : एक समकालीन अध्ययन'** विषय पर वेबिनार का आयोजन

जवाहरलाल नेहरू अध्ययन केंद्र (CJNS) जामिया मिल्लिया इस्लामिया ने 26 अगस्त 2022 को **'नेहरू और नैम : एक समकालीन अध्ययन'** विषय पर वेबिनार का आयोजन किया। *'द एशियन थिंकर'* के प्रबंध संपादक डॉ. शैलेश त्रिपाठी ने उपरोक्त विषय पर व्याख्यान दिया।

जवाहरलाल नेहरू अध्ययन केंद्र की निदेशक, प्रोफेसर इंदु वीरेंद्रा ने सभी का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की शुरुआत की और उच्च अधिकारियों को उनके समर्थन के लिए आभार ज्ञापित किया। प्रो. इंदु वीरेंद्रा ने प्रतिभागियों को केंद्र के विषय में अवगत कराया। उन्होंने वक्ता डॉ. शैलेश त्रिपाठी, गणमान्य व्यक्तियों, शोधार्थियों और साथी सहयोगियों का अभिनन्दन किया और आमंत्रित वक्ता का सहभागियों से परिचय कराया| प्रो. इंदु वीरेंद्रा ने अपना बीज वक्तव्य देते हुए कहा कि आज के वेबिनार का विषय है जैसा कि आप सभी जानतें हैं, पंडित नेहरू का गुटनिरपेक्ष आन्दोलन **{Non-Aligned Movement (NAM)}** में बहुत हीं महत्वपूर्ण भूमिका रही है। सदियों की गुलामी से भारत तब एक नव-स्वतंत्र देश के रूप में दुनिया के पटल पर उदित हुआ था। ऐसे में तत्कालीन भारत को वैश्विक पटल पर एक स्वतंत्र और सम्प्रभु देश के रूप में अपने को स्थापित करना एक बड़ी चुनौती थी। ऐसे में गुटनिरपेक्षता की संकल्पना को पंडित नेहरू उस जनरल टिटो और कर्नल नासिर के स्था मिलकर एक नया मुकाम दिया। यह संकल्पना जल्दी ही एक आन्दोलन बन गया। जिसे गुटनिरपेक्ष आन्दोलन अर्थात **Non-Aligned Movement** यानि **NAM** कहा गया। तीसरी दुनिया कई देशों के लिए जो तत्कालीन दो-ध्रुवीय (अमेरिका और सोवियत संघ) में शामिल नहीं होना चाहते थे, उनके उनके लिए यह वरदान साबित हुआ।

उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद का संगठित विरोध 1920 के दशक के अंत में शुरू हुआ था। जवाहरलाल नेहरू ने गुटनिरपेक्ष आंदोलन के ज़रिए महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

6 सितंबर 1961 में सबसे पहले गुटनिरपेक्ष आंदोलन सम्मेलन में बेलग्रेड घोषणा को अपनाया गया था। फिर 20 सितंबर 1961 को न्यूयॉर्क में संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत यूनियन के बीच सामान्य और पूर्ण निरस्त्रीकरण पर मैकक्लो-ज़ोरिन समझौते पर हस्ताक्षर किए गए थे। दोनों ही समझौतों में बहुत कुछ समान बातें है। हक़ीक़त यह है कि बेलग्रेड घोषणा ने मैकक्लो-ज़ोरिन समझौते के अंतिम संस्करण को काफी हद तक प्रभावित किया था, जो कि बहुत ही शक्तिशाली संयुक्त बयान था। दुर्भाग्य से, सहमति सिद्धांतों को लागू करने से सैन्य-औद्योगिक गठजोड़ के भाग्य पर पड़ने वाले संभावित प्रतिकूल प्रभाव ने मौजूदा शक्तियों से सख्त विरोधी-प्रतिक्रियाओं को उकसाया था।

संकाय डीन प्रो. रविन्द्र कुमार, ने अपने उद्बोधन में प्रोफेसर इंदु वीरेंद्रा, निदेशक, जवाहरलाल नेहरू अध्ययन केंद्र को इतने बेहतरीन बौद्धिक कार्यक्रम के लिए विशेष रूप से बधाई दी। उन्होंने आमंत्रित वक्ता डॉ. शैलेश त्रिपाठी और सभी का स्वागत किया।

डॉ. शैलेश त्रिपाठी ने अपने व्याख्यान की शुरुआत बड़े हीं रोचक तरीके से किया। भारत गुटनिरपेक्ष आंदोलन का संस्थापक और इसके सबसे महत्त्वपूर्ण सदस्यों में से है तथा 1970 के दशक तक भारत ने इस आंदोलन की बैठकों में सक्रिय रूप से हिस्सा लिया, किंतु 1970 के दशक के बाद गुटनिरपेक्ष आंदोलन में भारत की स्थिति बदलने लगी और सोवियत संघ की ओर भारत का झुकाव बढ़ने लगा,

जिससे गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) के उद्देश्यों को लेकर छोटे देशों के बीच भ्रम की स्थिति पैदा हो गई।

अंततः इससे गुटनिरपेक्ष आंदोलन की स्थिति कमज़ोर हुई और अधिकांश छोटे देश या तो अमेरिका की ओर या फिर सोवियत संघ की ओर अग्रसर होने लगे।

वर्ष 1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद वैश्विक स्तर पर अमेरिका का वर्चस्व कायम हो गया, यह वह समय था जब भारत ने अर्थव्यवस्था में बड़े आर्थिक सुधार किये। इसका परिणाम यह हुआ कि भारत कि आर्थिक नीति अमेरिका की ओर झुकने लगी, जिससे इस आंदोलन को लेकर भारत की गंभीरता पर एक बार पुनः प्रश्न उठने लगे।

गुटनिरपेक्ष आंदोलन को लेकर भारत की गंभीरता एक बार फिर संदेह के दायरे में आई जब वर्ष 2016 और वर्ष 2019 में गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) के शिखर सम्मेलन में भारतीय प्रधानमंत्री ने हिस्सा नहीं लिया, यह पहली बार हुआ था जब भारत का कोई प्रधानमंत्री गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) के शिखर सम्मेलन में हिस्सा नहीं ले रहा था।

संकट के दौर में इस आंदोलन के सदस्य देश भारत को अपना समर्थन देने में विफल रहे हैं। उदाहरण के लिये वर्ष 1962 के युद्ध के दौरान घाना और इंडोनेशिया जैसे देशों ने चीन समर्थक नीति का अनुसरण किया था। वहीं 1965 और 1971 के युद्ध के दौरान इंडोनेशिया और मिस्र ने भारत विरोधी नीति अपनाते हुए पाकिस्तान का समर्थन किया था। गुटनिरपेक्ष आंदोलन में आम सहमति का अभाव दिख रहा है और इसमें शामिल अधिकांश देश आपस में ही गुटबंदी कर रहे हैं।

अब भारत एक परमाणु शक्ति संपन्न देश है, वहीं गुटनिरपेक्ष आंदोलन के प्राथमिक उद्देश्यों में परमाणु निरस्त्रीकरण की नीति भी शामिल है।

उपनिवेशवाद और शीत युद्ध की पृष्ठभूमि में हुआ था, किंतु अब दोनों ही समाप्त हो चुके हैं, जिसके कारण लोग मानते हैं कि गुटनिरपेक्ष आंदोलन की प्रासंगिकता भी समाप्त हो गई है, हालाँकि अधिकांश जानकार मानते हैं कि गुटनिरपेक्ष आंदोलन आज भी अपने सिद्धांतों के कारण उतना ही प्रासंगिक है, जितना शीत युद्ध के दौर में था।

गुटनिरपेक्ष आंदोलन ने विश्व शांति को संरक्षित करने के प्रयासों में सक्रिय भूमिका निभाई है। गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) के सदस्य देश आज भी शांतिपूर्ण और समृद्ध दुनिया स्थापित करने के अपने लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ रहे हैं और भारत भी इनमें से एक है। गुटनिरपेक्ष आंदोलन क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता के सिद्धांत का समर्थन करता है और इसके सदस्य देशों द्वारा प्रत्येक राष्ट्र की स्वतंत्रता के संरक्षण के विचार को बार-बार दोहराया जाता है, जो कि इसकी मौजूदा प्रासंगिकता को स्पष्ट करता है।

गुटनिरपेक्ष आंदोलन एक न्यायसंगत विश्व व्यवस्था को बढ़ावा देने का प्रयास कर रहा है। यह अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में विद्यमान राजनीतिक और वैचारिक मतभेदों के बीच एक सेतु का काम कर सकता है।

यदि विकासशील देशों के बीच किसी विशिष्ट मुद्दे को लेकर मतभेद पैदा होता है तो गुटनिरपेक्ष आंदोलन उस मतभेद को हल करने हेतु एक महत्त्वपूर्ण मंच के रूप में कार्य कर सकता है।

गुटनिरपेक्ष आंदोलन में कुल 120 विकासशील देश शामिल हैं और इनमें से लगभग सभी देश संयुक्त राष्ट्र (UN) के सदस्य हैं। गुटनिरपेक्ष आंदोलन संयुक्त राष्ट्र के दो-तिहाई सदस्यों का प्रतिनिधित्त्व करता है।

एक विचार के रूप में गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) कभी भी अप्रासंगिक नहीं हो सकता है, इसका कारण यह है कि सैद्धांतिक तौर पर यह आंदोलन आज भी अपने सदस्य देशों को उनकी विदेश नीति निर्धारित करने का आधार प्रदान करता है।

गुटनिरपेक्ष आंदोलन को इसकी स्थापना के समय की भाँति वर्तमान में भी अपने उद्देश्यों में एकरूपता लानी होगी, इसके अतिरिक्त सदस्य देशों को क्षेत्रीय गुटबंदी की राजनीति पर रोक लगाने का प्रयास करना होगा।
गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) का आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन और व्यापार संरक्षणवाद जैसे महत्त्वपूर्ण वैश्विक मुद्दों को उठाने के लिये एक मंच के रूप में प्रयोग किया जाना चाहिए।

कार्यक्रम का समापन जवाहरलाल नेहरु अध्ययन केंद्र की निदेशक प्रो. इंदु वीरेंद्र के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। प्रो. वीरेन्द्र ने जामिया के सभी उच्च अधिकारियों और आमंत्रित वक्त डॉ. शैलेश त्रिपाठी को धन्यवाद दिया। उन्होंने आयोजन टीम, जामिया और अन्य संस्थान के छात्र, शोधर्थियों और संकाय सदस्यों को भी धन्यवाद दिया। निदेशक ने सभी प्रतिभागियों को धैर्य और गम्भीरता से वेबिनार को सफल बनाने के लिए हार्दिक धन्यवाद दिया।

जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

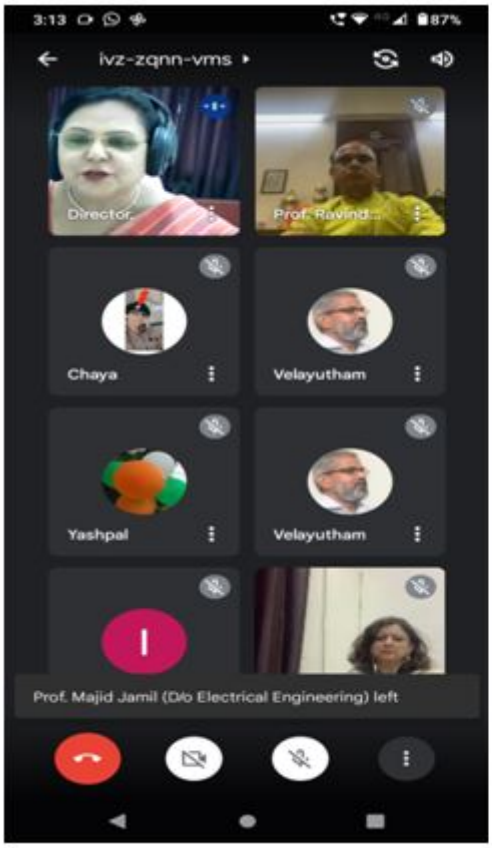
3:13
87%
ivz-zqnn-vms
Director,
Prof. Ravind...
Chaya
Velayutham
Yashpal
Velayutham
Prof. Majid Jamil (Dlo Electrical Engineering) left

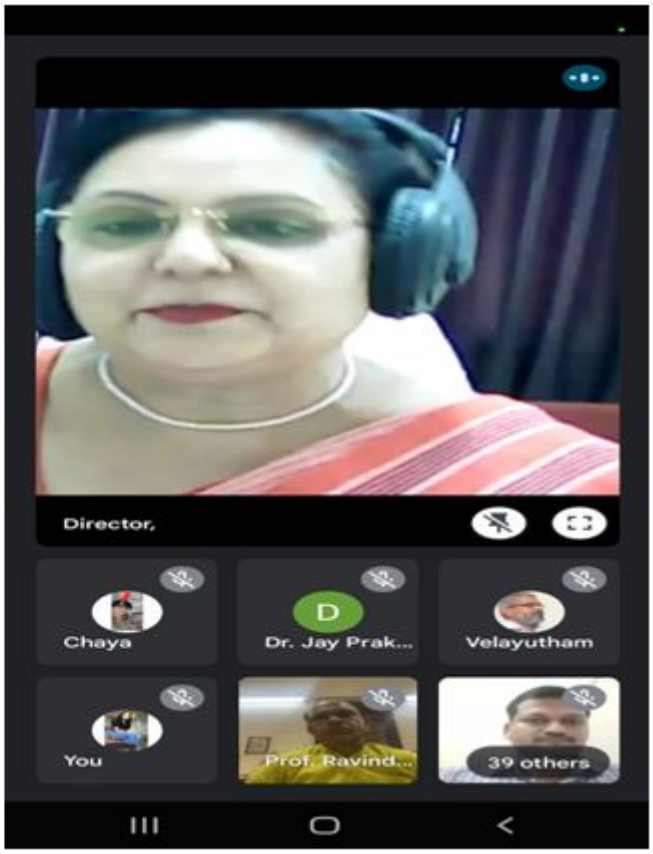
Director,
Chaya
Dr. Jay Prak...
Velayutham
You
Prof. Ravind...
39 others

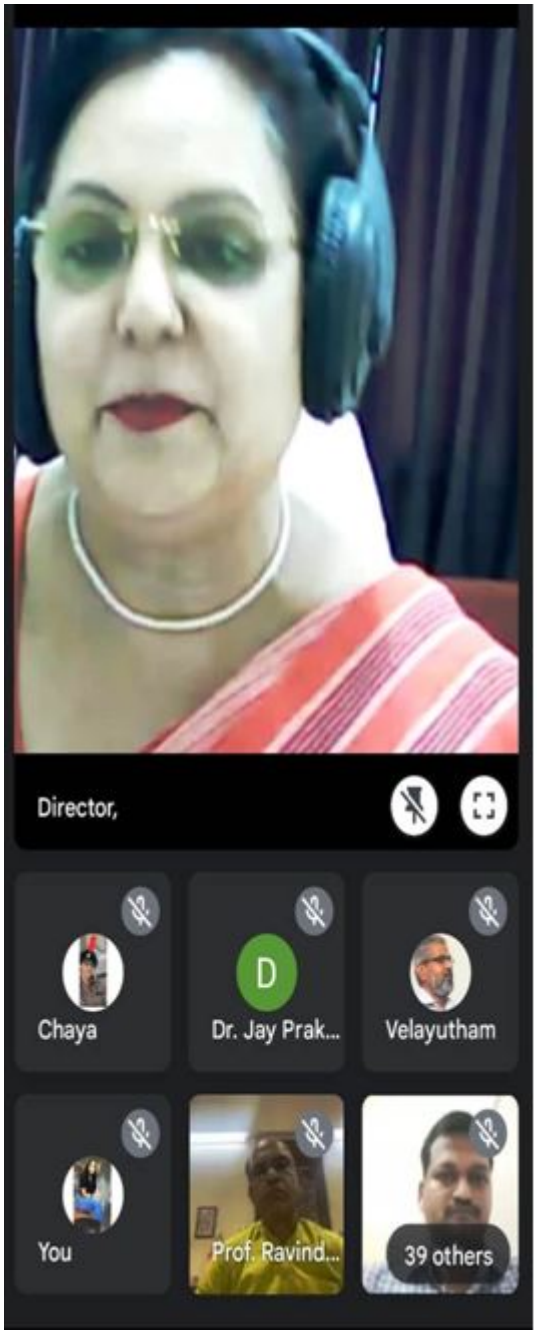
Director,
Chaya
D
Dr. Jay Prak...
Velayutham
You
Prof. Ravind...
39 others

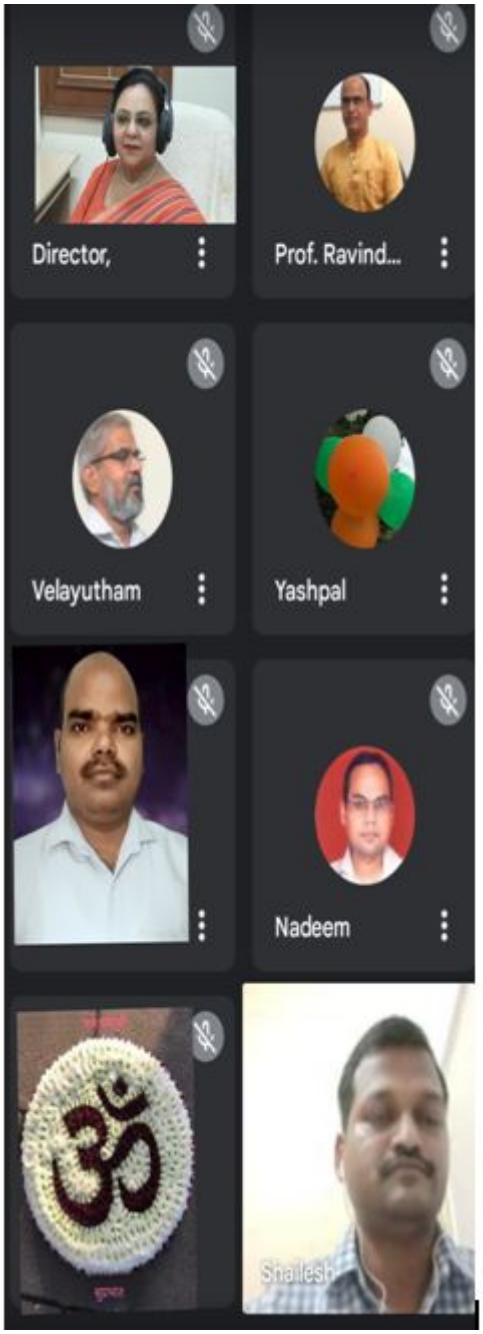
Director,
Prof. Ravind...
Velayutham
Yashpal
Nadeem
Shailesh